अर्द्धवार्षिक

ISSN : 2347-8012
Peer Reviewed Research Journal

अंक-8
जनवरी-जून
2022

नव सृजन

(साहित्यिक शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक
डॉ. आशीष सिसोदिया

ISSN : 2347-8012
Peer Reviewed Research Journal

अर्द्धवार्षिक

नव सृजन

(साहित्यिक शोध पत्रिका)

प्रधान संपादक
डॉ. आशीष सिसोदिया

उप-संपादक
डॉ. तरुण पालीवाल
डॉ. अर्पिता जैन

सलाहकार मंडल

1. प्रो. बी.एल. चौधरी, अध्यक्ष, पूर्वकुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं
   पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर
2. प्रो. नन्दकिशोर पाण्डे, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
3. प्रो. सीमा मलिक, आचार्य, अंग्रेजी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
4. प्रो. सदानंद प्रसादगुप्त, कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास
   टंडन हिंदी भवन, लखनऊ
5. डॉ. नरेंद्र मिश्र, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
6. डॉ. कमला जैन, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या एवं अनुसंधान अधिकारी, विद्यालय शिक्षा
   राजस्थान

नवसृजन

आलेख का क्रम

1. जनजातीय मेलों की परम्पराऐं एवं उनका महत्व-सिरोही जिले के विशेष संदर्भ में-डॉ. कुसुम राठौड़ 3
2. मेवाड़ सर्किट के भौगोलिक पर्यटन स्थल (उदयपुर जिलें के उद्यानों के विशेष संदर्भ में)-डॉ. मनोज दाधीच और राहुल पालीवाल 8
3. राजसमन्द जिले के द्वारकाधीश मंदिर में विशेष मनोरथ- एक सर्वेक्षण-डॉ. ललिता राठौड़ 16
4. प्राचीन से वर्तमान तक संस्कारों का बदलता परिदृश्य एवं उपयोगिता-डॉ. अनुसुया उपाध्याय 21
5. गोड़वाड़ सर्किट में पर्यटन विकास में मेलों की भूमिका-जगदीश कुमार 29
6. इंटरनेट पर भाषायी विविधता और सोशल मीडिया पर हिन्दी का नया स्वरूप : चुनौतियां एवं संभावनाएं-डॉ. कुंजन आचार्य और कल्पना आचार्य, 36
7. वनउपज के अन्तर्गत तेन्दु पत्ता व्यापार एवं आर्थिक विकास (दक्षिणी राजस्थान का कालिक अध्ययन)-डॉ. युवराज सिंह राठौड़ और डॉ. धीरज पालीवाल 42
8. दक्षिणी राजस्थान की जनजातियों में महिलाओं की प्रस्थिति-डॉ. सुमित्रा शर्मा और माया सेन 48
9. पर्यावरण संरक्षण में अमृता देवी का योगदान-डॉ. राजू सिंह और डॉ. विद्या मेनारिया 61
10. मीणा जनजाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन-डॉ. संगीता अठवाल और निशा मीना 68
11. महिला सशक्तिकरण: महिला विकास के कार्यक्रम-डॉ. संगीता अठवाल और सुनीता बागोरिया 77
12. भारत में बेरोजगारी की समस्या-डॉ. दीपिका राय 84

ISSN : 2347-8012 Peer Reviewed Rearch Journal

पर्यावरण संरक्षण में अमृता देवी का योगदान

डॉ. राजू सिंह
सहायक आचार्य
समाजशास्त्र विभाग
विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राजस्थान)

डॉ. विद्या मेनारिया
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग
विद्या भवन रूरल इनस्टीयूट
उदयपुर (राजस्थान)

राजस्थान का नाम आते ही हमें उस वीर भूमि के दर्शन होते हैं जिसमें अनेक वीर योद्धा सन्तशिरोमणी उत्पन्न हुए जिन्होने समय-समय पर अपने प्राणों की परवाह नहीं करते हुए जनरक्षार्थ और परमार्थ की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। चाहे वह गौरक्षा हो, जनहित हो, इसी क्रम में पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अमृता देवी का नाम सर्वोपरी है। जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह नहीं करते हुए पर्यावरण संरक्षण करने के लिए अपने प्राण दे दिए। अपने पूरे परिवार को वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदान दे दिया।

अमृता देवी राजस्थान के जोधपुर जिले के एक गांव खेजड़ली की निवासी थी। इनके तीन बेटियाँ थी। ये बिश्नोई समाज से तालुक रखती थी। बिश्नोइ लोग पर्यावरण प्रेमी होते हैं इनके गुरू व इस संप्रदाय के संस्थापक जांभोजी जो कि एक महान पर्यावरणविद् भविष्यवक्ता थे उन्होनें बिश्नोई समाज के लिए 29 नियम बनाए जिनका पालन प्रत्येक बिश्नोइ को करना आवश्यक होता हैं। जिसमें जीवों पर दयाभाव रखने व वन तथा वन्यजीवों का संरक्षण भी शामिल हैं। इस समाज को एकमात्र पर्यावरण प्रेमी समाज की उपाधि भी प्राप्त की

बिश्नोई धर्म के गुरू जाम्भेश्वर भगवान

गुरू जाम्भेश्वर भगवान (1451-1536) ने बिश्नोई धर्म के लिए 29 नियम का उपदेश दिया था। गुरू जाम्भेश्वर जाम्भोजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। जाम्भोजी महाराज का जन्म पंवार गोत्र के क्षत्रिय कुल में हुआ। लोग उन्हे भगवान विष्णु का अवतार मानते है। उनके 120 शब्द प्रमाणिक रूप से उपलब्ध है, जाम्भोजी ने जम्भसागर नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की जिसे पांचवा वेद कहा जाता है। भगवान जाम्भोजी महाराज ने कहा था। जीव दया पालणी, रूंख लीलो न घावेंगुरू जाम्भेश्वर भगवानजिसका अर्थ है कि 'जीव मात्र के लिए दया का भाव रखें, और हरा वृक्ष नहीं

काटे 'बरजत मारे जीव, तहां मर जाइए गुरू जाम्भेश्वर भगवान

जिसका अर्थ है कि 'जीव हत्या रोकने के लिये अनुनय-विनय करने, समझाने-बुझाने के बाद भी सफलता नहीं मिले, तो स्वयं आत्म बलिदान कर दें'।[1]

इन्हीं उपदेशों का पालन करते हुए अमृता देवी ने पेड़ों को बचाने के लिए पेड़ से चिपक गई जिसके बाद महाराजा के सैनिकों द्वारा कुल्हाड़ी से वार करने पर उनकी मृत्यु हो गई। अमृता देवी के बलिदान के बाद उनकी तीनों बेटियों ने भी पेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी। यह खबर पूरे गांव और और विश्नोई समाज में आग की तरह फैल गई जिसके बाद कुल 363 लोगों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान का बलिदान दिया।प्रकृति संरक्षण के लिये प्राणोत्सर्ग कर देने की घटनाओं ने समूचे विश्व में भारत के प्रकृति प्रेम का परचम फहराया है। अमृता देवी और पर्यावरण रक्षक बिश्नोई समाज की प्रकृति प्रेम की एक घटना हमारे राष्ट्रीय इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। सन् 1730 में राजस्थान के जोधपुर राज्य में छोटे से गांव खेजड़ली में घटित इस घटना का विश्व इतिहास में कोई सानी नहीं है। जोधपुर बसाने वाले राव जोधा जी गुरु जम्भेश्वर जी के ही शिष्य थे। जोधा जी के प्रार्थना करने पर गुरु जम्भेश्वर जी ने ही उन्हें बैरीसाल का नगाड़ा दिया था। गुरु जाम्भोजी की कृपा से ही जोधपुर नगर आबाद हुआ था। उन्हीं जोड़ा जी की परम्परा में विक्रम सम्वत 1700 में अजित सिंह जी जोधपुर के राजा बने। अजित सिंह जी पूर्णतय धर्मात्माधार्मिक राजा थे। ऐसे ही अजित सिंह का पुत्र अभयसिंह हुआ जो अपने पिता के स्वर्गवासी होने के पश्चात राज-सिंहासन पर बैठा। अपने राज्य की सीमा की सुरक्षा के साथ ही राज्य विस्तार की भावना से कई इलाकों पर चडाई कर दी व इस प्रकार अपना अधिकतर समय युद्ध में ही व्यतीत करते थे।[2]

सन् 1730 में जोधपुर के राजा अभयसिंह को जब युद्ध से थोड़ा अवकाश मिला तो उन्होंने महल बनवाने का निश्चय किया। राजा अभय सिंह के राज में राज्य का सम्पूर्ण कार्य सूत्र भंडारी गिरधर के ही हाथ में था, वह जैसा चाहता था वैसा ही प्रजा से करवा भी लेता था। राज्य पूर्णतय गिरधर के हाथ में चढ़ चूका था, इसीलिए गिरधर की ही मनमानी चलती थी। गिरधर स्वयं ही राजा के पास जाकर कहने लगा कि-हे अन्नदाता ! इस समय राज कोष कि हालत बहुत खराब चल रही है कर्मचारियों की नोकरी के लिए भी पैसे नहीं बचे हैं तथा आपने जो किला बनवाना शुरू किया हुआ है उसके लिए चूने का भट्टा जलाने के लिए इंधन-सामग्री चाहिए। यदि आप आज्ञा दे तो मैं इसकी व्यवस्था कर दूं। मुझे पता चला है की यहाँ पास ही में बिश्नोईयों के गाँव में खेजड़ी के बहुत से वृक्ष है उन्हें कटवाकर लाता हूँ और उस इंधन से चुन जला लिया जाएगा। और अपनी समस्या भी हल हो जायेगी। इस पर राजा अभय सिंह ने उसे समझाते हुए कहा कि बिश्नोई लोग जाम्भोजी के शिष्य हैं, वे तुम्हे हरे वृक्ष नहीं काटने देंगे। तुम्हे खाली हाथ ही लोटना पड़ेगा। तो इस पर गिरधर ने कहा कि कोई बात नहीं अगर वो हमें पेड़ नहीं काटने देंगे तो हम उनके बदले उनसे कुछ रूपये की मांग रख देंगे, और उन रुपयों से हम किसी अन्य जगह से पेड़ों की व्यवस्था कर लेंगे। हमारे तो दोनों ही हाथों में लडडू हैं।

इस प्रकार गिरधर राजा अभय सिंह को पूर्ण आश्वासन देकर कुछ सिपाहियों के साथ जोधपुर से चल

कर 25 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में खेजड़ली गाँव पहुंचा और वृक्ष कटवाना शुरू कर दिया। वृक्षों पर कुल्हाड़ी की चोट से पड़ने वाली आवाज को वहाँ के लोगो ने सुना तो देखते ही देखते वहाँ पर कई आदमी इकट्ठा हो गए, और उन वृक्षों को काटने वाले आततायी लोगो से कुल्हाड़ी छीन ली और उनको वहां से वापिस भगा दिया। निहत्थे कर्मचारीयों ने जब यह वृत्तांत गिरधर को सुनाया तो गिरधर क्रोधित होते हुए उन बिश्नोई समुदाय के लोगो के पास पहुंचा और कहने लगा की आप लोग होते कौन हो हमारे कर्मचारियों को रोकने वाले? हम राजा अभय सिंह के आदेशानुसार ही यहाँ आयें हैं। हमारा अपमान राजा का अपमान है। आप लोग हमें इन पेड़ो को काटने से नहीं रोक सकते। तो इस पर बिश्नोईयों की तरफ से अणदे ने आगे बढकर कहा की हमें पता नहीं था की आप कौन हैं? पर आप जो भी हैं सायद आपको ज्ञात नहीं है की आप बिश्नोई के इलाके में प्रवेश कर गए हैं और यदि आप जोधपुर से इन पेड़ो को काटने के उद्देश्य से ही आयें हैं तो आप वापिस चले जाएँ इसी में आपका भला है। तो गिरधर ने कहा कि तू गवांर होता कौन है मुझे रोकने वाला, और ऐसा कहते हुए उसने अपने कर्मचारियों को पेड़ काटने का आदेश दे दिया, पर कर्मचारी निहत्थे होने के कारन पेड़ काटने का साहस नहीं कर सके, और इस प्रकार से उन कर्मचारियों ने वृक्ष काटने से साफ मना करते हुए जोधपुर वापसी कि तैयारी करने लगे। तो इस पर गिरधर ने कहा कि चलो हम पेड़ नहीं काटेंगे पर आपको इसके बदले में रूपये देने होंगे तो बिश्नोईयों ने उसमे भी साफ मना कर दिया कि आप हमारी ही इस कमाई से कहीं और जगह से पेड़ कटवाओगे, और ये पाप हम नहीं कर सकते। आप चाहें तो हमारे सिर काट सकते हो पर हम पेड़ो को नहीं काटने देंगे। इस पर गिरधर चुप-चाप वहाँ से जोधपुर के लिए निकल पड़ा। जाते समय बिश्नोइयोन से उसकी दशा से अनुमान लगा लिया था कि अब जरुर कोई बड़ी विपदा आने वाली है क्योंकि वह क्रोध से भरा हुआ था और उसके होठ फड़क रहे थे। इसीलिए हमें चेन से नहीं बैठना चाहिए। दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता अवश्य ही दिखाएगा। इसीलिए कि बिश्नोईयों को ये आभाष हो गया था कि अब ये दुष्ट सेना के साथ आ सकता है इसीलिए बिश्नोईयों ने अपने पास के 84 गाँवों को चिट्ठी लिखी जिसमे सारा वृतांत बताने के साथ ही ये भी लिखा कि अब समय आ गया है हमें अपने प्राणों को दांव पर लगाने का, अब समय आ गया है हमें हमारे गुरु के सच्चे अनुयायी कहलाने का इसीलिए जो जो अपना धड कटवाने के लिए तैयार हैं वो जल्दी से जल्दी खेजड़ली पहुंचे। इस पत्र को लिखकर फिर ये पत्र पत्र-वाहकों को देकर भेज और अतिशीघ्र सूचित किया। पत्र मिलते ही 84 गाँवों के लोग आने लगे। कुछ ने गुड़े तो कुछ ने खेजड़ली में आसन लगाया।[3]

अब सब गिरधर कि प्रतीक्षा करने लगे। उधर गिरधर खिन मन से जोधपुर पहुंचा और खेजड़ली घटना का बढ़ा चढ़ा कर सुनाया। राजा भी कुछ क्रोधित हुआ पर जल्द ही शांत भी हो गया। पर गिरधर फिर से कहने लगा कि ये बिश्नोई लोग धरम के नाम पर दिनोदिन उच्छखल होते जा रहे हैं जब तक इनको दण्डित नहीं किया जाएगा तब तक ये इसी प्रकार करते रहेंगे। इसीलिए मेरा तो यही विचार है कि मुझे बहुत बड़ी सेना के साथ वहाँ भेजा जाए मैं वहाँ के सम्पूर्ण वृक्ष कटवा लाता हूँ ये लोग इन्ही पर ही तो गर्व कर रहे हैं फिर न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी तो इस पर अभय सिंह ने कहा कि ये जाम्भोजी के शिष्य हैं ये मर जायेंगे

मगर पीछे नहीं हटेंगे और आज तक हमारे दादा जी से लेकर किसी ने भी निर्दोष पर अत्याचार नहीं किया है वे हमेशा ही वृक्षों कि रक्षा करते आये हैं अब अगर मैं ऐसा करूंगा तो मेरा तो कुल ही कलंकित हो जायेगा ना। तुम्हारी बुद्धि ही ना जाने ऐसी क्यों हो गयी है कि वो तुम्हे धरम विरुद्ध मार्ग पर ही धकेल रही है। इतना बड़ा फैसला लेने से पहले मैं अपनी नगरी के विद्वानों से सलाह लूँगा।[4]

इस प्रकार जब सभी विद्वानों कि सलाह ली गयी तो सभी ने ही कहा कि धर्म कि मर्यादा जो आपके यहाँ आदि काल से चली आ रही है उसे नहीं तोडना चाहिए और फिर इन बिश्नोईयों का इसमें निजी स्वार्थ ही क्या है उनका कार्य तो सर्वजन हिताय है और जो कार्य सर्वसाधारण कि भलाई के लिए हो उसे जानी लोग धर्म कहते हैं। इसिलए उन्हें मारने कि बात तो अपने मन से ही निकाल दीजिये हमारा तो यही मत है अब आपको जैसा उचित लगे वैसा ही करो। तो गिरधर ने राजा के पास आकर कहा कि ये सब तो आपके विरोधी हैं अगर ये आपके सहयोगी होते तो ये राज्य की उन्नति की ही बात कहते। इधर देखिये आपका किला अधुरा पड़ा है राजा अगर प्रजा पर शासन नहीं चला सकता तो वह कहाँ का राजा है इस प्रकार से प्रजा मनमानी करने लग जायेगी तो तुम्हारा शासन डोल जाएगा। इस प्रकार से राजा व गिरधर के बीच में बहुत वार्ता हुयी पर अंत में राजा अभयसिंह को गिरधर ने अपने वाकजाल में फंसा ही लिया।

एक बड़ी सेना के साथ खेजड़ली जाने की आज्ञा ले ली और आज्ञा मिलते ही देरी न करते हुए जल्दी ही गिरधर बड़ी से सेना और पेड़ काटने वाले मजदूरों के साथ खेजड़ली पहुँच गया। और वही जाकर सेना डेरा लगाया और जगह-जगह अपने तम्बू लगा लिए। बिश्नोईयों की जमात उस रात सो ना सकी किन्तु गिरधर अपनी योजना को प्रात:काल में ही सफल करने के विचार कर के रात्रि में मंत्रणा कर के सो गया। बिश्नोई लोग पूरी रात मंत्रणा ही करते रहे की प्रात:काल में ये दुष्ट अपने सम्पूर्ण बल लगाएगा और निश्चित ही पेड़ काटने का प्रयास करेगा। इसीलिए रात्रि में सभी बिश्नोईयों ने मिलकर ये निर्णय लिया कि हम लोग प्रजा हैं यह राजा का सेन्यबल है इन लोगो के पास शस्त्र है हमारे पास नहीं है। इसीलिए अगर हम इनसे युद्ध करते हैं तो जीत नहीं सकते हिंसा से तो हिंसा अधिक ही होगी। गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि ''जै कोई आवै हो हो कर तो आपजै हुईये पानी'' यदि हम लोग इस सिद्धांत को अपनाए तभी सफल हो सकते हैं इसलिए प्रात:काल में जब वह गिरधर पेड़ो को कटवाना शुरू करें तो तब जितने भी रुंख काटने वाले इकट्ठे रहेंगे और अलग.अलग पेड़ो को काटेंगे तो उतने ही लोग इन रुंखो से चिपक जायेंगे। शरीर कटवा लेंगे पर रुंखो को नहीं काटने देंगे। किसी प्रकार का सामना नहीं करना है मन में सहनशीलता धारण करनी होगी कहीं ऐसा न हो कि आप लोग अत्याचार देखकर उतेजित हो जाओ और युद्ध कर बैठो अगर ऐसा है तो कृप्या पीछे हट जायें। हमें यहाँ शांति से कार्य करना है।[5]

उधर सूर्योदय पर गिरधर भंडारी और उसकी सेना उठी और और उठते ही अच्छा मौका देखकर पेड़ काटने शुरू कर दिए। वृक्षों पर कुल्हाड़ी की चोट से पड़ने वाली आवाज को जब बिश्नोई समुदाय के लोगो ने सुना तो देखते ही देखते वहाँ पर कई सौ आदमी इकट्ठा हो गए सभी नारी पुरुष अपना जीवन समपर्ण करने आये थे। और तुरंत भगवान् विष्णु को हृदय में धारण करके जिभ्या से भगवान् विष्णु का ही जप करते हुए

गुरु जम्भेश्वर जी को नमन करते हुए वहाँ से 363 बिश्नोईयोंय 69 महिलाये और 294 पुरूष जिसमे प्रथम शहीद माता श्री अमृतादेवी विश्नोई थी फिर सब ने प्रस्थान किया और जहां वृक्ष काटे जा रहे थे वहाँ जाकर बिना कुछ बोले सुने निर्भय होकर रुंखो से चिपक गए। वहाँ पर राजकर्मचारी खेजड़ी पर घाव कर ही रहे थे कि उसी पर इन बिश्नोईयों ने अपने शरीर को रख दिया। उन रुंखो को जो पहले से चोट लग चुकी थी उसके लिए परमात्मा से माफी मांगी आगे के लिए अपना शरीर पेड़ो पर रखते हुए उन पेड़ो को सुरक्षित रख दिया। जो चोट पेड़ो पर पड़ रही थी अब वही शरीरों पर पड़ रही थी। शरीर बिना कोई हुंकार किये ही ये सब झेल रहे थे।"

इस बलिदान यज्ञ में सर्वप्रथम आहुति देने का श्रेय 42 वर्षीय महिला अमृता देवी को मिलता है। इनके पीछे इनकी तीन पुत्रियां व पति रामू खोड़ भी थे। इनके बलिदान को देखकर इनकी माता जी कान्हा कालीरावणी ने भी पीछे रहना ठीक नहीं समझा व अपने प्राणों कि आहुति भी दे दी। पुरुषो में सर्वप्रथम अणदोजी वीरता वणियाल चचो जी उधोजी काह्नोजी तथा किसान जी ने अपने प्राणों कि आहुति खेजड़ी वृक्षों कि रक्षार्थ में दी। देखते ही देखते 363 शरीरों के हाथ-पाँवए सिर-धड़ आदि के टुकड़े-टुकड़े हो कर धरती पर गिरने लगे। धरती खून से लाल हो गयी। यह घटना भादवा सुदी दशमी मंगलवार विक्रम संवत 1787 कि है। गिरधर ने जब तक रोकने का आदेश नहीं दिया तब तक वे कर्मचारी शरीर के टुकड़े करते ही रहे। 363 शरीरों के ना जाने कितने ही टुकड़े उन दया.हीन जानो ने किये होंगे उसका कोई अन्तपार नही है। जब वे कर्मचारी एक-एक शरीर के टुकड़े को काट चुके थे तो जब पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि अभी भी कई सौ बिश्नोई समुदाय के लोग इन रुंखो के लिए जान देने के लिए तैयार हैं। तब कर्मचारी लोगों का साहस जवाब दे गया वो सब कुल्हाड़ी फेंक कर जोधपुर के लिए भाग खड़े हुए। सैनिको ने भी उन्ही का ही अनुसरण किया। आते समय जो गिरधर सब से आगे आया था जाते समय वही हारे हुए मन से अपनी हार पर उदास होकर वापिस लोट गये और जोधपुर नरेश को पूरी घटना से अवगत करवाया। अभयसिंह ने इस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए गिरधर को दण्डित किया और कहा कि रे दुष्ट ! यह पाप तुमने किया है किन्तु मेरे साशन अधिकार में हुआ है इसीलिए इसके फल का भागी तो मैं ही हूँ। एक तो वो लोग हैं जो परीक्षों कि रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे रहे हैं और एक तू हैं जो उन्ही के प्राण लेकर आया है। अरे निर्दयी ! कुछ तो दया करनी सीखी होती तूने। इस प्रकार बाद में अभयसिंह खुद भी पश्चाताप कि आग में जलने लगा। फिर एक दिन अभयसिंह खुद बिश्नोईयों कि जमात में जाकर अपने सिर कि पगड़ी बिश्नोईयों के पैरों में रख दी और प्रार्थना करते हुए कहा कि ये मेरा ये सिर आपके चरणों में हैं आप चाहे तो इसे काट दे चाहे तो छोड़ देए मैं आपका अपराधी हूँ। जब तक जिन्दा हूँ तब तक पश्चाताप की आग में जलता रहूँगा। तो बिश्नोईयों ने कहा कि हम तो वृक्षों के लिए प्राण न्योछावर करने वाले हैं हमसे आपका सिर नहीं काटा जाएगा। आप हम पर बस यहीं उपकार करें कि जिन वृक्षों को बचाने के लिए बलिदान दिया है वो वृक्ष कभी ना काटे जाएँ। और अगर कोई काटता है तो उसमे दंड का प्रावधान हो। अभयसिंह ने उनकी बात स्वीकार करते हुए उन बिश्नोईयों को एक पट्टा लिखकर दिया जिसमे भविष्य में ऐसी कोई घटना के ना होने का वचन था। इस वन को हरा-भरा बनवाऊंगा ऐसा कहते हुए अभयसिंह जोधपुर पहुंचा और अपने राज्य में वृक्षों कि

रक्षा तथा जीव रक्षा का नियम बना दिया तथा उसका पालन भी सख्ती से होने लगा।[7]

अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार जोधपुर, राजस्थान

यह खेजडली बलिदान कि घटना 21 सितम्बर 1730 भादवा सुदी दशमी मंगलवार विक्रम संवत 1787 का ऐतिहासिक दिन विश्व इतिहास में इस अनूठी घटना के लिये हमेशा याद किया जायेगा। समूचे विश्व में पेड़ रक्षा में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने की ऐसी कोई दूसरी घटना का विवरण नहीं मिलता है। हमारे देश में केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय तथा सभी राज्य सरकारों द्वारा पर्यावरण एवं वन्यजीवों के संरक्षण के लिये अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।[8]

हमारे यहां प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय के तत्वावधान में एक माह की अवधि का राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान भी चलाया जाता है। यह विडम्बना ही कही जायेगी कि हमारे सरकारी लोक चेतना प्रयासों को इस महान घटना से कहीं भी नहीं जोड़ा गया है। हमारे यहां राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के लिये इस महान दिन से उपयुक्त कोई दूसरा दिन कैसे हो सकता है आज सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि 21 सितम्बर के दिन को भारत का पर्यावरण दिवस घोषित किया जाये यह पर्यावरण शहीदों के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की सच्ची श्रृद्धांजलि होगी और इससे प्रकृति संरक्षण की जातीय चेतना का विस्तार हमारी राष्ट्रीय चेतना तक होगा इससे हमारा पर्यावरण समृद्ध हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Thapar, Valmik (1997). Land of the Tiger: A Natural History of the Indian Subcontinent. University of California Press. p. 179. ISBN 9780520214705.
2. Sharma, B. K.; Kulshreshtha, Seema; Rahmani, Asad R. (14 September 2013). Faunal Heritage of Rajasthan, India: General Background and Ecology of Vertebrates. Springer Science & Business Media. ISBN 9781461408000.
3. Gottlieb, Roger S. (1996). Bhishnois: Defenders of the Environment This Sacred EarthÑ Religion, Nature, Environment, by. Published by Routledge. ISBN 0-415-91233-4. Page 159 .
4. Amrita Devi Bishnoi Wildlife Protection Award-The Official Website of

Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India Ministry. Government of India. Retrieved 20 November 2020.

5. Bishnois organise and educate themselves to take environment conservation beyond religion. Mongabay-India. 7 April 2020. Retrieved 20 November 2020.

6. On Environment Day5 June 2018, recognise Bishnois for saving trees. Business Standard India. Press Trust of India. Retrieved 15 December 2020.

7. Bishnoi villagers sacrifice lives to save trees, 1730 Global Nonviolent Action Database. On database swarthmore.edu. Retrieved 20 August 2017.

8. Chapple, C. K.(2011) . "Religious Environmentalism: Thomas Berry, the Bishnoi, and Satish Kumar." Dialog 50, no.Ñ 336–343.

◆◆◆